

साध्यभक्ति स्त्री. (तत्.) पराभक्ति।

साध्यवसान रूपक वि. (तत्.) साहित्य में रूपक अलंकार का वह भेद जो साध्यवसाना लक्षणा से युक्त होता है।

साध्यवसाना स्त्री. (तत्.) 1. लक्षणा का वह भेद जिसमें स्वयं उपमान में उपमेय का अध्यवसाय (तादात्म्य) किया जाता है अर्थात् उपमान-उपमेय में अभेद की प्रतीति होती है 2. जो अध्यवसाय के सहित हो।

साध्यवसाना लक्षणा स्त्री. (तत्.) वह लक्षण जिसमें आरोप के कथन के बिना केवल आरोप्यमान के कथन मात्र से लक्ष्यार्थ व्यक्त होता है जैसे- वह साक्षात् दुर्गा है (किसी साहसी व शक्तिशाली स्त्री के लिए कथन)।

साध्यवसानिका स्त्री. (तत्.) साध्यवसाना लक्षणा।

साध्यवसाय वि. (तत्.) उक्ति या कथन जो साध्यवसाना लक्षणा से युक्त हो।

साध्यवान वि. (तत्.) व्यावहारिक रूप में वह पक्ष जिस पर अपना मत प्रमाणित करने का दायित्व या भार हो।

साध्यसम पुं. (तत्.) न्यायदर्शन में पाँच प्रकार के हेत्वाभासों में से एक जिसमें किसी हेतु को साध्य के ही समान सिद्ध करने की आवश्यकता होती है।

साध्वस पुं. (तत्.) 1. तीव्रता से 2. घबराहट, बेचैनी 3. प्रतिमा 4. भय, डर।

साध्वाचार पुं. (तत्.) 1. साधुओं के जैसा आचरण या व्यवहार 2. शिष्टाचार।

साध्वी वि. (तत्.) 1. शुद्ध आचरणवाली 2. पतिव्रता।

सानंद वि. (तत्.) जो आनंद से युक्त हो अव्य. आनंद से (मजे से) या प्रसन्नतापूर्वक पुं. 1. संगीत. सोलह प्रकार के ध्रुवकों में से एक वह जिसका प्रयोग ज्यादातर वीर रस के वर्णन में होता है।

सान पुं. (तद्.) 1. एक प्रकार का वह पत्थर रूपी उपकरण जिस पर रगड़कर धारदार औजारों (चाकू, कैंची आदि) तथा हथियारों की धार चोरमी या तेज की जाती है 2. प्रायः चक्कर के आकार का वह यंत्र जिसमें लगे हुए पत्थर को तेजी से घुमाते हुए औजारों आदि पर सान रखते हैं पुं. संकेत, इशारा।

सान-गुन पुं. (देश.) 1. किसी काम या बात का स्वल्प रूप से संभावित अनुमान, नाममात्र की हो सकने वाली कल्पना 2. थोड़ा भी अनुमान।

सानना अ.क्रि. (देश.) 1. किसी वस्तु के चूर्ण को पानी, दूध आदि में मिलाकर उसे गाढ़ा या तरल रूप देना 2. मिट्टी को पानी से गीला करना 3. आटा गूँथना 4. सत्तू सानना 5. पशुओं के लिए भूसा को आटा, खली आदि से जल के साथ मिलाना।

सानल वि. (तत्.) 1. जो अग्नि-युक्त हो 2. कृत्तिका नक्षत्र से युक्त।

साना अ.क्रि. (देश.) 1. शांत होना 2. नष्ट हो जाना स.क्रि. 1. शांत करना 2. समाप्त करना वि. (देश.) गुँथा हुआ, मिश्रित।

सानि क्रि.वि. (देश.) गूँथकर, पानी आदि में मिला करके।

सानी¹ स्त्री. (देश.) गाय-भैंस आदि को खली आदि में मिलाकर दिया जाने वाला भूसा वि. 1. गूँथी गई 2. किसी तरल वस्तु से मिलाई गई।

सानी² वि. (अर.) 1. दूसरा 2. तुल्य, बराबरी या जोड़ का विलो. लासानी।

सानु पुं. (तत्.) 1. पर्वतीय या पहाड़ की चोटी, शिखर 2. ढलावदार भूमि 3. वन 4. मार्ग 5. पेड़ का पत्ता 6. सूर्य 7. पंडित, विद्वान वि. चौरस, सपाट।

सानुकंप वि. (तत्.) 1. जिसके हृदय में दूसरों के प्रति अनुकंपा/दया हो, कृपालु, दयालु क्रि.वि. अनुकंपा के सहित, अनुकंपा पूर्वक, कृपा पूर्वक।